दयासागर पराशर

मुनीन्द्रं रामनिष्ठं च जटोर्ध्वपुण्डधारकम्।
वन्दे पराशराचार्यं शक्तिपुत्रं जगद्गुरुम् ॥६॥

अर्थात - जो मुनियों में श्रेष्ठ हैं, जो भगवान श्रीराम में निष्ठा रखने वाले हैं, जो सिर पर जटा और मस्तक पर ऊर्ध्वपुण्ड्र को धारण करने वाले हैं - उन मुनि शक्ति के पुत्र एवं जगद्गुरु आचार्य पराशर को मैं वन्दन करता हूँ।

परम् भागवत महर्षि पराशर
शक्तिसूनुं पराशरं स्तौति
(शक्तिपुत्र पराशर की स्तुति)
@मेरूशृंग
पवनाकुलकाशलेशकल्पं प्रभवादेव पराहताशराशम्।
प्रणमामि पराशरं मुनीशं प्रचरद्वैष्णवसंहिताप्रकाशम् ॥७॥
अर्थात - जिस प्रकार वायु जीर्ण (क्षीण) हुए बाणों (के समूह) को विशीर्ण कर उसके टुकड़े कर देती है, उसी प्रकार इस नवजात बालक (पराशर) ने वध की इच्छा रखने वाले राक्षसों (के बाणों) को नष्ट (तिरस्कृत) कर दिया था। वैष्णव संहिता (विष्णु पुराण) रूपी प्रकाश को (सम्पूर्ण जगत्त में) प्रसारित करने वाले उन मुनीश्वर पराशर को मैं नमस्कार करता हूँ।
- वेदान्तपञ्चप्रकरणी

वेद तथा वेदाङ्गों में पारङ्गत सत्वगुण सम्पन्न मुनिश्रेष्ठ पराशर
"पराशरं नौमि गुरुं मुनीनाम्"
(गुरु-स्वरूप मुनि पराशर को नमस्कार है।)
@मेरुश्रृंग
मुनिः श्रीमान् शक्तिपुत्रः पराशरः।
सर्ववेदान्तरत्नानामाकरः करुणानिधिः॥३॥
स्वस्वरूपमहानन्दप्रकाशपरमाम्बुधौ।
निमग्नो निश्चलस्तुष्णीमास्ते केवलमास्तिक॥४॥
अर्थात - शक्ति के पुत्र मुनि पराशर 'श्रीसम्पन्न',
सभी वेदान्तों के रत्नाकर, तथा दूसरों पर दया करने वाले हैं।
सुन्दर रूप को धारण करने वाले, महानन्द, प्रकाश के समान देदीप्यमान,
(सुखरूपी) परम सागर में निमग्न, निश्चल, (ज्ञान-विज्ञान से) तृप्त तथा
ईश्वर के ही अस्तित्व को मानने वाले हैं।

■ श्री पराशर वन्दना - पञ्चदश श्लोकी

◆ आज हम अपनी इस अति महत्वपूर्ण पोस्ट का प्रारम्भ एक महा पुण्यश्लोक से करना चाहते हैं। यह पुण्यश्लोक निम्न हैं -

"शक्तेः पराशरः श्रीमान् सर्वज्ञस्तपतां वरः।"

- "#कूर्म_पुराण"

#अर्थात - #पराशर_मुनि "श्री" (ऐश्वर्य, आचरण एवं कीर्ति) से युक्त, सर्वज्ञ एवं तपस्वियों में श्रेष्ठ हैं।

ॐ नमो हरिहरहिरण्यगर्भेभ्यो नमो
व्यासवाल्मीकिशुकपराशरेभ्यो नमो गुरुगोब्राह्मणेभ्यः ॥१॥

#अर्थात - ॐ ! श्री हरि, हर और हिरण्यगर्भ को नमन। व्यास, वाल्मीकि, शुक और #पराशर को नमन। गुरुओं, गायों और ब्राह्मणों को नमन। 🙏

◆ महर्षि पराशर - एक परिचय

१. महर्षि पराशर भगवान शिव के अनन्य उपासक थे। इनके स्मरण, जप और आराधना से समस्त कामनाओं की पूर्ति तथा पापों का नाश होता है। अतः कहा भी गया है कि - 'पराशृणाति पापानीति पराशरः।' अर्थात जिसके दर्शन-स्मरण मात्र से ही समस्त पापों का नाश हो जाये वहीं 'पराशर' है।

२. महर्षि पराशर पाशुपत व्रत का आचरण करने वाले, शरीर में भस्मलेपन करने वाले, रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले तथा त्रिपुण्ड्र से सुशोभित मस्तक वाले हैं। (इसके अतिरिक्त) वे (मुनि पराशर) धर्मपरायण, वेद-वेदाङ्ग (चारों वेदों और छहों वेदाङ्गों) के ज्ञाता, लिङ्गार्चन में सदा तत्पर, बाहर तथा भीतर से भगवान शिव में भक्ति रखने वाले योगध्यानपरायण तथा जितेन्द्रिय हैं। महर्षि पराशर वेद-पारंगत ब्राह्मण हैं तथा योगमार्ग की वृद्धि करने वाले हैं।

३. धर्म और ज्ञान के समुद्र महामुनि पराशर की पूजा की बात हो और उनकी वन्दना और वन्दना गीत न हो, ऐसा सम्भव नहीं है। मुनि पराशर की वन्दना का महत्व प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में रहा है। जिन लोगों के पास ज्ञानमूर्ति, पुण्यश्लोक पराशर की कोई भी वन्दना उपलब्ध नहीं है, उनके लिए हम यहाँ पुण्यमयी तथा सिद्धिदायिनी पञ्चदश श्लोकी पराशर वन्दना दे रहे हैं, जिन्हें आप पूजा के दौरान पढ़ सकते हैं। अद्भुतकर्मा ऋषि 'श्री पराशर' जी की वन्दना पढ़ने से मनुष्य को यश, कीर्ति, सुख, समृद्धि तथा विद्या सहज ही प्राप्त हो जाती है।

४ यह पोस्ट तीन भागों में बांटी गई है। पहले भाग में मुनिश्रेष्ठ 'श्री पराशर' जी की वन्दना श्लोक हैं तथा दूसरे भाग में पुण्यश्लोक पराशर के स्तुति श्लोक दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त तीसरे भाग में परिशिष्ट भी दी गयी है।

■ भाग-१

॥पराशर-वन्दना॥

◆ भगवान पराशर की वन्दना इस प्रकार है -

ब्रह्मनिष्ठोऽतितेजस्वी योगविद्यापरायणः।

ऋषिर्जयति धर्मज्ञः पुण्यश्लोकः पराशरः॥१॥

अर्थात - जो ब्रह्मनिष्ठ (ब्रह्मज्ञान से युक्त) हैं, जो अति तेजस्वी तथा योगविद्यापरायण (योग-विद्या में तत्त्पर तथा पूर्ण निष्ठा रखने वाला) हैं, ऐसे धर्मज्ञ एवं पुण्य-कीर्ति वाले (उत्तम आचरण वाले) ऋषि पराशर की जय हो।

पौत्रो मुनेर्वसिष्ठस्य शक्तेश्चैवात्मजस्थता।

अदृश्यन्ती सुतो यश्चः मुनिर्वन्द्यः पराशरः॥२॥

#अर्थात - जो मुनि वसिष्ठ के पौत्र हैं, जो शक्ति मुनि के आत्मज तथा अदृश्यन्ती सुत हैं, उन मुनि पराशर को नमस्कार है।

मनस्विनं त्यागपरञ्च सौम्यं सुशोभितं ब्रह्मसुखानुभूत्या।

भक्त्या ब्रुवन्तं श्रुतिशास्त्रसारं पराशरं नौमि गुरुं मुनीनाम्॥३॥

#अर्थात - जो मनस्वी हैं, त्यागपरञ्च और सौम्य गुणों से सुशोभित हैं, जिन्होंने ब्रह्मसुख को अनुभव किया है तथा जिन्होंने भक्ति-भाव से श्रुति-शास्त्र (वेद-शास्त्र) के सार अर्थात वेदान्तज्ञान को कहा है, ऐसे गुरु स्वरूप मुनि पराशर को मेरा नमस्कार है।

वेदज्ञं मन्त्रद्रष्टारं तपः सिद्धिप्रतिष्ठितम्।

नमामि धर्मतत्वज्ञं महाभागवतं मुनिम्॥४॥

#अर्थात - वेदों को जानने वाले, मन्त्रद्रष्टा, तपस्वी, सिद्धि में प्रतिष्ठित रहने वाले, धर्म के तत्व को जानने वाले, #महाभागवत (परम् वैष्णव भक्त) मुनि (#पराशर) को मेरा नमस्कार है।

सत्यकामं ऋषिं शान्तं सत्यवत्यै वरप्रदम्। भक्तिज्ञानविरागाप्तं प्रणमामि पराशरम् ॥५॥

#अर्थात - जो सत्य-प्रेमी है, जो समस्त चिन्ताओं को त्यागकर शान्त हो गए हैं, और जो सत्यवती को वर प्रदान करने वाले हैं, जिन्होंने भक्ति, ज्ञान तथा विराग (राग-द्वेष रहित भाव) - को पूर्ण-रूप से प्राप्त कर लिया है, ऐसे ऋषि पराशर को मेरा प्रणाम है।

अष्टादशपुराणानां प्रणेता भारतस्य च।

वेदव्यासः सुतो यस्य धन्यं तं नौम्यहं मुनिम् ॥६॥

#अर्थात - अठारह पुराणों के प्रणेता महामुनि वेदव्यास जिनके पुत्र हैं, जो धन्य और बड़े ही पुण्यशाली हैं, उन मुनि पराशर को मैं नमस्कार करता हूँ।

वेदान्तदर्शनस्रष्टा विष्णोरंशसमुद्भवः।

चिरजीवी सुतो यस्य तं मुनिं प्रणतोऽस्मयहम् ॥७॥

#अर्थात - जो वेंदान्त-दर्शन (ब्रह्मसूत्र) के रचयिता हैं, और जिनके पुत्र भगवान विष्णु के अंश से उत्पन्न हुए हैं तथा चिरंजीवी हैं, ऐसे मुनि पराशर को मैं प्रणाम करता हूँ।

ज्ञानावतारस्य च जन्महेतुं सत्कर्म सद्धर्मविदां वरिष्ठम् ।

पराशरं सत्त्वनिधिं विधिज्ञं नमामि भक्त्या परमं महर्षिम् ॥८॥

#अर्थात - जो ज्ञान के अवतार हैं तथा सत्कर्म ही जिनके जन्म (के ऐश्वर्य, वैभव तथा सुख) - के कारण है, तथा जो सद्धर्म जानने वालों में श्रेष्ठ हैं, ऐसे सत्वनिधि (सत्वगुण से युक्त), विधिज्ञ (विधि को जानने वालों में श्रेष्ठ), परम् महर्षि पराशर को मैं भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ।

पौत्रो हि यस्य प्रथितो विरक्तो ज्ञानाब्धिचन्द्रश्च शुकः शिवांशः।

महामुनिर्भागवतोपदेष्टा पराशरं तं प्रणमामि भक्त्या ॥९॥

अर्थात - जो वैराग्य-युक्त (निरासक्त रहने वाले) है, जो (मस्तक) पर चन्द्र को धारण करने वाले शिव का अंश है, जो ज्ञान के समुद्र हैं और भागवत के उपदेशक हैं - वे महामुनि शुक जिनके पौत्र हैं, ऐसे पुण्यवान् मुनि पराशर को मैं भक्ति-भाव से प्रणाम करता हूँ।

यो विधूतमहाकामशरो नाम्ना पराशरः।

कोपेशयशरो यश्च तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१०॥

अर्थात - जिन्होंने कामदेव के (पाँच) महा बाणों (सम्मोहन, उन्मादन, शोषण, तापन, स्तम्भन) - को दूर करके उनके प्रभाव को क्षीण कर दिया, वे ही (इस जगत में) पराशर नाम वाले कहे गए हैं। ऐसे श्री गुरुदेव जी को नमस्कार हो।

पराशरं वशिष्ठस्य पौत्रं धर्मविदांवरम् ।

रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्य प्रणमाम्यहम् ॥११॥

#अर्थात -वशिष्ठ के पौत्र पराशर धर्म को जानने वालों में श्रेष्ठ हैं। उन राम-प्रपन्न (राम की शरण में आये हुए), योगियों में श्रेष्ठ, अपने आचार्य (पराशर) को मैं प्रणाम करता हूँ।

तत्वेन यश्चिदचिदीश्वरतत्स्वभाव ।

भोगापवर्ग-तदुपायगतीरुदारः ।।

सन्दर्शयन्निरमिमीत पुराणरत्नम् ।

तस्मै नमो मुनिवराय पराशराय ॥१२॥

#अर्थात - मैं उन उदारचित्त #महर्षि_पराशर को प्रणाम करता हूँ, जिन्होंने जड़-चेतन, ईश्वर तथा उनका स्वरूप, भोग-मोक्ष तथा उनकी प्राप्ति के उपयुक्त उपायों का वर्णन करते हुए पुराण रत्न (विष्णु पुराण) की रचना की है।

जीवेश्वरादिन् लोकेभ्यः कृपया यः पराशरः।

सन्दर्शयन तत्स्वभावान् तदुपायगतीस्तथा ॥

पुराणरत्नं संचक्रे मुनिवर्यः कृपानिधिः।

तस्मै नमो मुनिवराय पराशराय ॥१३॥

#अर्थात - जिन कृपामय #मुनि_पराशर ने लोगों के प्रति दयावश जीव, ईश्वर, जगत, उनका स्वभाव तथा उन्नति का उपाय स्पष्ट रूप से समझाते हुए पुराणरत्न (#विष्णु_पुराण) की रचना की, उन मुनिवर पराशर को मेरा नमस्कार है।

अष्टोत्तरशतं जप्त्वा गायत्रीं वेदमातरम्।

वन्दनां प्रपठेद् भक्त्या साधकः सिद्धिदायिनीम्

॥१४॥

अर्थात - एक सौ आठ बार वेदमाता गायत्री (-मन्त्र) का जप करके जो तपस्वी इस (पराशर) वन्दना को भक्ति-भाव से पढ़ता है, वह सिद्धि को प्राप्त करता है।

पराशराय तन्मन्त्रं कुरुक्षेत्रे जगौ स च।

पराशरो जजापेनं भक्त्याऽऽचारेण सादरम् ॥१५॥

#अर्थात - मुनि पराशर के इन मन्त्रों का (परम पवित्र धर्मक्षेत्र) कुरुक्षेत्र में उत्तम आचरण का पालन करते हुए ध्यान करना चाहिए। तथा पराशर (- इस नाम का) सादर भक्ति-भाव से जप करना चाहिए।

- वैदिक संग्रह

■ भाग -२

■ पराशर स्तुति श्लोक (एकादश श्लोकी) -

ॐ नमो हरिहरहिरण्यगर्भेभ्यो नमो व्यासवाल्मीकिशुकपराशरेभ्यो नमो गुरुगोब्राह्मणेभ्यः ॥१॥

#अर्थात - ॐ ! श्री हरि, हर और हिरण्यगर्भ को नमन। व्यास, वाल्मीकि, शुक और #पराशर को नमन। गुरुओं, गायों और ब्राह्मणों को नमन।

- #स्कन्द_पुराण, #अवंतीखण्ड-#रेवाखण्ड, #अध्याय-१

भार्गवे ब्रह्मणस्पतये सूर्याय पराशराय ससुताय।

गर्गाय च अष्टदसऋषये नमोऽस्तु ज्योतिष्शास्त्रकर्तृभ्यः ॥२॥

#अर्थात - भार्गव, बृहस्पति, सूर्य, पुत्र सहित पराशर, गर्ग - इन अठारह ज्योतिष-शास्त्र प्रणेताओं को मेरा नमस्कार।

मनवे वाचस्पतये शुक्राय पराशराय ससुताय। चाणक्याय च विदुषे नमोऽस्तु नयशास्त्रकर्तृभ्यः

॥३॥

#अर्थात - स्वयंभू मनु, बृहस्पति, शुक्र, पुत्र सहित #मुनि_पराशर, विद्वान चाणक्य और नीतिशास्त्र के प्रणेताओं को मेरा नमस्कार।

- #पञ्चतन्त्रम

नमो वसिष्ठाय महाव्रताय पराशरं वेदनिधिं नमस्ये।

नमोऽस्त्वनन्ताय महोरगाय, नमोऽस्तु सिद्धेभ्य इहाक्षयेभ्यः ॥४॥

अर्थात - महान व्रतधारी #वसिष्ठ को नमस्कार है, #वेदनिधि_पराशर_को_नमस्कार_है, विशाल सर्प-रूपधारी अनन्त (शेषनाग) को नमस्कार है, अक्षय सिद्धगण को नमस्कार है।

- #महाभारतम्, अनुशासन पर्व (दानधर्म पर्व) अध्याय - १५० (पृष्ठ संख्या - ६०५०)

अगस्त्यो गालवो गार्ग्यः शक्तिर्धौम्यः पराशरः ।

कृष्णात्रेयश्च भगवानसितो देवलो बलः ॥५॥

एते चान्ये च ऋषयो बहवः शंसितव्रताः।

मुनयः शंसितात्मानो ये चान्ये नानुकीर्तिताः

॥६॥

अर्थात - अगस्त्य, गालव, गार्ग्य, शक्ति, धौम्य, #पराशर, कृष्णात्रेय, ऐश्वर्यशाली असित-देवल, बल, - ये और दूसरे बहुत-से उत्तम व्रत का पालन करने वाले ऋषि एवं शुद्धात्मा मुनि तथा दूसरे यज्ञ परायण, स्पृहणीय तथा #शान्त_महर्षि जिनका यहाँ कीर्तन नहीं किया गया है, सदा मेरे लिये शान्ति प्रदान करें।

- #हरिवंश_पुराण, विष्णु पर्व,

अध्याय - १०९, श्लोक - ८६, ९४

प्रह्लाद-नारद-पराशर-पुण्डरीक-व्यासाम्बरीष-शुक-शौनक-भीष्म-दाल्भ्यान्।

रुक्माङ्गदार्जुन-वसिष्ठ-विभीषणादीन् पुण्यानिमान् परमभागवतान् नमामि ॥७॥

#अर्थात - पाण्डवों ने कहा- प्रह्लाद, नारद, #पराशर, पुण्डरीक, व्यास, अम्बरीष, शुकदेव, शौनक, भीष्म, दाल्भ्य, रुक्माङ्गद, अर्जुन (सहस्रार्जुन), #वसिष्ठ और विभीषण आदि – इन पुण्य प्रदान करने वाले परम भक्तों को हम नमस्कार करते हैं।

- #पाण्डव_गीता

मनुर्मरीचिर्भृगुदक्षनारदा:

पराशरो व्यासवशिष्ठभार्गवा:।

वाल्मीकिकुम्भोद्भवगर्गगौतमा:

कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥८॥

#अर्थात - मनु, मरीचि, भृगु, दक्ष, नारद, #पराशर, व्यास, वशिष्ठ, भार्गव, वाल्मीकि, कुम्भोद्भव, अगस्त्य, गर्ग और गौतम ऋषि - ये सभी मेरे प्रभात को शुभ तथा मंगलमय करें।

अव मन्युरवायतावं बाहू मनोयुजा ।

पराशर त्वं तेषां पराञ्चं शुष्ममर्दयाधा नो रयिमा कृधि ॥९॥

निर्हस्तेभ्यो नैर्हस्तं यं देवाः शरुमस्यथ ।

वृश्चामि शत्रूणां बाहून् अनेन हविषाऽहम् ॥१०॥

#अर्थात - (शत्रु के) क्रोध एवं शस्त्रास्त्र दूर हों। शत्रुओं की भुजाएं अशक्त एवं मन साहसहीन हों। हे दूर से ही शर-संधान में निपुण देव (#पराशर)! आप उन शत्रुओं के बल को परांगमुख करके नष्ट करें तथा उनके धन हमें प्रदान करें।

- अथर्ववेद, काण्ड-६, (शत्रुनाशक) सूक्त-६.०६५

【ऋषि - अथर्वा, देवता - #पराशर, छन्द-१, २ पथ्यापंक्ति, २-३ अनुष्टुप】

अपराजितो जितारातिः सदानन्दो दयायुतः।

गोपालो गोपतिर्गोप्ता कलिकालपराशरः॥११॥

मनोवेगी सदायोगी संसारभयनाशनः।

तत्वदाताथ तत्वज्ञस्तत्वं तत्वप्रकाशकः ॥११.१॥

#अर्थात - शत्रुओं के द्वारा अजेय, शत्रुओं को जीतने वाले, सदा आनन्दित रहने वाले, दयालु, पृथ्वी का पालन करने वाले, इंद्रियों के स्वामी, भक्तों के रक्षक #कलिकाल के #पराशर अर्थात कथावाचकों के उत्पादक महामुनि पराशर मन के समान वेगवाले, सदा योगयुक्त रहने वाले, भवभय का नाश करने वाले, तत्वज्ञान के दाता, तत्वज्ञानी, ब्रह्मस्वरूप और तत्व का प्रकाश करने वाले हैं।

- #पराशर_शाबर_मन्त्र

■ भाग -३

■ परिशिष्ट -

देवता कार्यक्रियास्य ईश्वरसाक्षिमात्रन्निध्यन,

हि नियमनसानिवृत्ती स्याताम् ॥१॥

#अर्थात - ईश्वर की उपस्थिति में देवता का शरीर और इंद्रियां कार्य करती हैं, वह केवल इस सब के साक्षी के रूप में कार्य करता है, इसलिए उसकी उपस्थिति से ही सभी कार्य होते हैं।

★ उत्तम व्रत का पालन करने वाले, योगियों में श्रेष्ठ, तपस्वियों में श्रेष्ठ, ऋषियों के ऋषि, तपोनिधि, विद्यानिधि, सत्यवादी #महर्षि_पराशर हमारा कल्याण करें। हम पर उनकी कृपा दृष्टि सदैव बनी रहे।